

भारत में यूरोपियों का आगमन(arrival of europeans in india) - पुर्तगाली साम्राज्य का उदय और पतन, PDF,PYQs (Part 1)

प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत

स्रोत श्रेणी	स्रोत का नाम / लेखक	लेख में कहाँ प्रयुक्त हुआ है? (विषय-वस्तु)
NCERT पाठ्यपुस्तकें	<ol style="list-style-type: none">कक्षा 8: हमारे अतीत - III (अध्याय 2: व्यापार से साम्राज्य तक)कक्षा 11: विश्व इतिहास के कुछ विषयकक्षा 12: भारतीय इतिहास के कुछ विषय - भाग II (थीम 5)	भूमिका (वास्को डि गामा का आगमन), पुर्तगालियों की प्रारंभिक गतिविधियाँ, कार्टेज प्रणाली, ब्रिटिश कंपनी का उदय।
मानक UPSC संदर्भ पुस्तकें	<ol style="list-style-type: none">आधुनिक भारत का इतिहास - विपिन चंद्र (अध्याय 3: यूरोपीय शक्तियों का आगमन)भारत का स्वतंत्रता संग्राम - विपिन चंद्र (पृष्ठभूमि खंड)A Brief History of Modern India - Spectrum Publications (अध्याय 3: Advent of Europeans)	संपूर्ण ऐतिहासिक कालक्रम, अल्मेडा बनाम अल्बुकर्क की नीतियाँ, दीव का युद्ध, हुगली का विनाश, पतन के कारण।
विशिष्ट इतिहास ग्रंथ	1. एशिया एंड वेस्टर्न डोमिनेंस - के.एम. पणिककर	'वास्को डि गामा युग' की अवधारणा और समुद्री आधिपत्य का विश्लेषण।
सरकारी रिपोर्ट/डेटा	<ol style="list-style-type: none">प्रेस इनफार्मेशन ब्यूरो (PIB) (वर्ष 2024-25 की विज्ञप्तियाँ)भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) वेबसाइट	गोवा मुक्ति दिवस की समसामयिकी, प्रोजेक्ट मौसम, भारत-पुर्तगाल कूटनीतिक संबंध (2024-26)।
वैश्विक निकाय रिपोर्ट	UNESCO विश्व धरोहर स्थल सूची	गोवा के चर्च और कॉन्वेंट का संदर्भ।
विधिक/न्यायिक स्रोत	गोवा, दमन और दीव (प्रशासन) अधिनियम, 1962 एवं गोवा सिविल कोड	लेख के अंत में 'वर्तमान चुनौतियाँ' खंड (गोवा नागरिकता संहिता का मुद्दा)।

प्रस्तावना - एक नए युग का सूत्रपात

इतिहास के पन्नों में कुछ घटनाएँ ऐसी होती हैं जो न केवल वर्तमान को बदल देती हैं, बल्कि आने वाली सदियों की दिशा भी तय कर देती हैं। भारत में यूरुपियों का आगमन (arrival of europeans in india) ऐसी ही एक युगांतरकारी घटना थी। यह मात्र व्यापारियों का एक भौगोलिक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना नहीं था; यह दो सभ्यताओं, दो आर्थिक प्रणालियों और दो विश्वदृष्टिकोणों का ऐतिहासिक संघर्ष और सम्मिलन था। वर्ष 1498 में वास्को डि गामा का कालीकट के तट पर उतरना एक सुनियोजित यूरोपीय विस्तारवाद का पहला सफल प्रहार था, जिसने अंततः भारतीय उपमहाद्वीप के राजनीतिक मानचित्र को पूर्णतः रूपांतरित कर दिया।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा के दृष्टिकोण से यह विषय अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह केवल 'आधुनिक भारत' (Modern India) के पाठ्यक्रम का प्रारंभिक अध्याय ही नहीं है, बल्कि यह समझने का आधार भी है कि भारत में उपनिवेशवाद की नींव कैसे पड़ी। प्रीलिम्स में इस खंड से गवर्नर, युद्ध और किलों से संबंधित तथ्यात्मक प्रश्न पूछे जाते हैं, जबकि मेन्स में इसकी प्रासंगिकता यूरोपीय शक्तियों की 'राज्य-विस्तार की नीतियों' और 'आर्थिक शोषण के स्वरूप' को विश्लेषित करने में निहित है। आइए, इस यात्रा की शुरुआत उस पहली यूरोपीय शक्ति से करते हैं जिसने भारत में अपना साम्राज्य स्थापित किया: पुर्तगाली।

पारिभाषिक शब्दावली एवं अवधारणा

भारत में यूरुपियों का आगमन से तात्पर्य 15वीं शताब्दी के अंत से 16वीं शताब्दी के प्रारंभ में पुर्तगाल, डच, ब्रिटिश और फ्रांसीसी जैसी पश्चिमी शक्तियों द्वारा समुद्री मार्गों की खोज के परिणामस्वरूप भारतीय उपमहाद्वीप में किया गया प्रवेश है। यद्यपि व्यापार इसका प्राथमिक उद्देश्य था, किंतु शीघ्र ही यह प्रक्रिया क्षेत्रीय राजनीति में हस्तक्षेप और अंततः उपनिवेशवाद में परिवर्तित हो गई।

प्रसिद्ध इतिहासकार के.एम. पणिकर ने इस काल को 'एशिया एंड वेस्टर्न डोमिनेंस' में 'वास्को डि गामा युग' की संज्ञा दी है। उनका मानना है कि गामा के आगमन ने हिंद महासागर में व्यापार की उस सदियों पुरानी स्वतंत्र व्यवस्था को समाप्त कर दिया, जिसमें अरब, भारतीय और दक्षिण-पूर्व एशियाई व्यापारी बिना किसी सैन्य नियंत्रण के कार्य करते थे। पुर्तगालियों ने 'कार्टेज' (Cartaze) प्रणाली लागू कर समुद्र में नौवहन के लिए लाइसेंस अनिवार्य कर दिया, जो एक प्रकार का समुद्री कराधान और नियंत्रण था।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: पूर्व की ओर बढ़ते कदम

पुर्तगालियों के आगमन की पृष्ठभूमि में पंद्रहवीं शताब्दी के यूरोपीय पुनर्जागरण और भौगोलिक खोजों का उत्साह छिपा है। कांस्टेंटिनोपल के पतन (1453 ई.) के पश्चात भूमध्य सागर के रास्ते एशियाई मसालों तक पहुंच ऑटोमन तुर्कों के नियंत्रण में आ गई थी, जिससे मसाले अत्यधिक महंगे हो गए थे।

प्रमुख घटनाक्रम:

- प्रिंस हेनरी द नेविगेटर (1394-1460): इन्होंने पुर्तगाल में एक नौवहन विद्यालय स्थापित किया और अफ्रीकी तट के अन्वेषण को प्रोत्साहन दिया।
- बार्थोलोम्यू डियाज (1487): ये 'केप ऑफ गुड होप' (आशा अंतरीप) तक पहुंचने वाले पहले यूरोपीय बने।
- वास्को डि गामा (1498): इन्होंने हिंद महासागर में प्रवेश किया और 17 मई 1498 को कालीकट के निकट काप्पड पहुंचे। उनके इस अभियान का नेतृत्व एक गुजराती नाविक अब्दुल मजीद ने किया था।

भारत में पुर्तगालियों का उदय और विस्तार

1. समुद्री मार्ग की खोज एवं पुर्तगालियों का आगमन

वास्को डि गामा का स्वागत कालीकट के हिंदू शासक ज़मोरिन ने किया। आरंभिक सौहार्द के बावजूद, पुर्तगालियों की अहंकारी कूटनीति और अरब व्यापारियों के प्रभाव के कारण शीघ्र ही संबंध तनावपूर्ण हो गए। गामा द्वारा लाई गई साधारण वस्तुएँ (तेल, शहद, कपड़ा) ज़मोरिन के दरबार के सामने बेकार साबित हुईं, जिससे पुर्तगालियों को यह एहसास हुआ कि यहाँ व्यापार करने के लिए उन्हें सोने या शक्ति का प्रदर्शन करना होगा। गामा 1499 में पुर्तगाल लौट गए और भारतीय मसालों की भारी माँग के कारण उनकी यात्रा से 60 गुना अधिक लाभ हुआ।

2. व्यापार से शासन तक: नीली जल नीति का जन्म

प्रारंभिक दौर में पुर्तगालियों की रणनीति व्यापारिक केंद्रों (फैक्ट्रियों) की स्थापना तक सीमित थी। कालीकट (1500), कोचीन (1503), और कन्नानोर (1505) में पहली फैक्ट्रियाँ खोली गईं। किंतु शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि बिना नौसैनिक शक्ति के अरब और मिस्र के व्यापारियों के प्रतिरोध को तोड़ना असंभव है। इसी आवश्यकता ने 'नीली जल नीति' (Blue Water Policy) को जन्म दिया, जिसका उद्देश्य हिंद महासागर में पूर्ण नौसैनिक वर्चस्व स्थापित करना था।

3. फ्रांसिस्को डी अल्मेडा (1505-1509): सामुद्रिक साम्राज्य के जनक

पुर्तगाली भारत के पहले वायसराय (राजप्रतिनिधि) के रूप में नियुक्त फ्रांसिस्को डी अल्मेडा ने 'ब्लू वाटर पॉलिसी' को क्रियान्वित किया। उनका प्रसिद्ध कथन था:

"जब तक आप समुद्र पर शक्तिशाली हैं, तब तक भारत आपका है; और यदि आपने वह शक्ति त्याग दी, तो तट पर स्थित किले आपके किसी काम नहीं आएंगे।"

अल्मेडा ने भू-भाग पर किले बंदी करने के स्थान पर नौसेना को सुदृढ़ करने पर बल दिया। 1509 ई. का दीव का युद्ध इस नीति की सबसे बड़ी सफलता थी, जिसमें पुर्तगाली बेड़े ने मिस्र के मामलुक सुल्तान, गुजरात के सुल्तान और कालीकट के ज़मोरिन की संयुक्त नौसेना को पराजित किया। इस विजय ने अगले 100 वर्षों के लिए हिंद महासागर पर पुर्तगाली आधिपत्य स्थापित कर दिया।

4. अफोंसो डी अल्बुकर्क (1509-1515): स्थलीय साम्राज्य के शिल्पकार

अल्बुकर्क को पूर्व में पुर्तगाली साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। उन्होंने अल्मेडा की नीति का विरोध करते हुए तर्क दिया कि केवल समुद्री शक्ति पर्याप्त नहीं है; स्थायी व्यापार और नियंत्रण के लिए रणनीतिक तटीय क्षेत्रों पर कब्जा आवश्यक है। 1510 ई. में बीजापुर के यूसुफ आदिल शाह से गोवा पर अधिकार उनकी नीति का प्रमुख उदाहरण है। गोवा शीघ्र ही पुर्तगालियों की राजधानी और 'पूर्व का रोम' बन गया। 1511 ई. में मलक्का पर अधिकार ने पूर्वी एशियाई मसाला व्यापार पर नियंत्रण स्थापित कर दिया।

उनकी नीतियाँ अत्यधिक आक्रामक और सामाजिक रूप से एकीकरणवादी थीं। उन्होंने पुर्तगाली सैनिकों का भारतीय महिलाओं से विवाह करवाकर एक वफादार मिश्रित जाति बनाने का प्रयास किया, जिससे गोवा में पुर्तगाली उपनिवेश की जड़ें गहरी हुईं।

5. नूनों दा कुन्हा (1529-1538): रणनीतिक आधारों का विस्तार

नूनों दा कुन्हा ने मुख्यालय कोचीन से हटाकर गोवा स्थानांतरित किया। उनके कार्यकाल की सबसे उल्लेखनीय घटना 1535 ई. में गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह से बेसीन (वसई) और दीव द्वीप का अधिग्रहण थी। दीव एक अत्यंत रणनीतिक द्वीप था जो कैंबे की खाड़ी के प्रवेश द्वार पर स्थित था। इसी प्रकार, बेसीन (वसई) उत्तर में पुर्तगाली शक्ति का केंद्र बन गया।

पुर्तगालियों के आगमन के समय भारत की स्थिति (राजनीतिक शून्यता का लाभ)

पुर्तगालियों की सफलता का एक बड़ा कारण उस समय भारत की विखंडित राजनीतिक स्थिति थी। 15वीं-16वीं शताब्दी का भारत किसी एक केंद्रीय सत्ता के अधीन नहीं था।

- उत्तर भारत: दिल्ली सल्तनत कमजोर पड़ चुकी थी और लोदी वंश अंतिम साँसें ले रहा था। मुगल साम्राज्य की नींव बाबर 1526 में ही रखने वाला था।
- दक्षिण भारत: विजयनगर साम्राज्य अपनी शक्ति के चरम पर था, लेकिन उसकी रुचि मुख्यतः दक्कन की सल्तनतों (बहमनी के उत्तराधिकारी) से संघर्ष में थी, न कि समुद्री सीमाओं की रक्षा में।
- तटीय क्षेत्र: कालीकट (ज़मोरिन), गुजरात (मुज़फ्फर शाही वंश) और बीजापुर (आदिल शाही) जैसे क्षेत्रीय शासक आपसी प्रतिद्वंद्विता में व्यस्त थे।

भारतीय शासकों ने पुर्तगालियों को प्रारंभ में एक नया व्यापारिक समुदाय समझा और उनकी नौसैनिक शक्ति के राजनीतिक निहितार्थों को समझने में भूल की। विजयनगर साम्राज्य ने तो बीजापुर के विरुद्ध अरबों से घोड़ों की आपूर्ति बनाए रखने के लिए पुर्तगालियों को संरक्षण भी दिया, जिससे पश्चिमी तट पर उनकी पकड़ मजबूत हुई।

पुर्तगालियों की व्यापार और राजनीति नीति

व्यापारिक एकाधिकार:

पुर्तगालियों ने हिंद महासागर के व्यापार को पूर्णतः नियंत्रित करने का प्रयास किया। यह उनकी व्यापार नीति की केंद्रीय विशेषता थी।

- कार्टेज प्रणाली: बिना पुर्तगाली लाइसेंस के समुद्र में नौकायन करने वाले किसी भी गैर-पुर्तगाली जहाज को जब्त करने और चालक दल को मृत्युदंड देने का अधिकार पुर्तगाली नौसेना के पास था।
- काफिला प्रणाली (**Cafila System**): भारतीय व्यापारियों के जहाज समूहों को पुर्तगाली युद्धपोतों के संरक्षण में चलना अनिवार्य था, जिसके एवज में भारी कर देना होता था।

प्रमुख व्यापारिक वस्तुएँ:

भारत से निर्यात	भारत में आयात
मसाले (विशेषकर काली मिर्च)	सोना और चाँदी (अमेरिकी खदानों से)
वस्त्र (कैलिको, मलमल)	ताँबा, सीसा
नील	घोड़े (फारस और अरब से)
चावल	मूंगा और मखमल

भारत में पुर्तगालियों का प्रशासन

पुर्तगाली प्रशासन का केंद्र एस्टाडो दा इंडिया (**Estado da India**) था, जिसका मुख्यालय गोवा था।

1. वायसराय (राजप्रतिनिधि): लिस्बन में पुर्तगाली सम्राट द्वारा नियुक्त, कार्यकाल सामान्यतः तीन वर्ष। वह सभी नागरिक और सैन्य मामलों का सर्वोच्च प्रमुख था।
2. वेदोर दा फ़र्जेदा: राजस्व एवं वित्त विभाग का प्रमुख। व्यापारिक अनुबंधों और कर वसूली का प्रबंधन इसी के अधीन था।
3. कप्तान (कैप्टन): विभिन्न दुर्गों और फैक्ट्रियों (जैसे दीव, बेसीन, कोचीन) का प्रशासनिक प्रमुख।

न्यायिक व्यवस्था: गोवा में उच्च न्यायालय (Relação) की स्थापना की गई थी। हालाँकि, धार्मिक मामलों में इन्क्विज़िशन (धर्माधिकरण) का भयावह हस्तक्षेप न्यायपालिका को प्रभावित करता था।

पुर्तगालियों की धार्मिक नीति (इन्क्विज़िशन की क्रूरता)

पुर्तगाली नीति का सबसे काला अध्याय उनकी धार्मिक असहिष्णुता थी। प्रसिद्ध धर्माधिकरणी फ्रांसिस ज़ेवियर के आगमन के पश्चात ईसाई धर्म के प्रचार के नाम पर अत्याचार बढ़ गया।

- **1560 ई.** में गोवा इन्क्विज़िशन की स्थापना: यह एक धार्मिक न्यायालय था जो नए धर्मांतरित ईसाइयों की 'शुद्धता' पर नज़र रखता था। हिंदू मंदिरों को नष्ट किया गया और पारंपरिक रीति-रिवाजों पर प्रतिबंध लगा दिया गया।
- मूर्तिभंजन और जबरन धर्मांतरण: अल्बुकर्क ने गोवा विजय के पश्चात ही मुस्लिम आबादी का सफाया कर दिया था और हिंदू मंदिरों से भू-राजस्व वसूलना प्रारंभ कर दिया था।

लेखक का परिचय:

लेखक: मो. अफजल अंसारी, एक UPSC अभ्यर्थी हैं जिन्हें एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में 4 वर्षों का अनुभव है। उनका वैकल्पिक विषय लोक प्रशासन है।

पुर्तगालियों ने मुगलों का विश्वास क्यों खोया?

पुर्तगालियों का पतन मुगल साम्राज्य के उदय के साथ ही निश्चित हो गया। उन्होंने कूटनीतिक भूलों की जिससे वे उत्तर भारत की सबसे बड़ी शक्ति से अलग-थलग पड़ गए।

1. बहादुर शाह की हत्या (1537): गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह ने मुगल बादशाह हुमायूँ के भय से पुर्तगालियों को दीव दिया था। जब बाद में बहादुर शाह दीव वापस लेने के लिए पुर्तगाली जहाज पर बातचीत करने गए, तो पुर्तगालियों ने उनकी हत्या कर दी। इस कृत्य ने मुगल दरबार में पुर्तगालियों को 'विश्वासघाती' के रूप में स्थापित कर दिया।
2. हुगली पर अधिकार और गुलामी का व्यापार: बंगाल की खाड़ी में पुर्तगाली दस्युता और विशेषकर बच्चों व ग्रामीणों को पकड़कर गुलाम बनाने की घटनाओं ने स्थानीय जनता और मुगल सूबेदारों में भारी रोष उत्पन्न किया।
3. मुगलों के लिए समुद्री मार्ग (हज) में बाधा: पुर्तगाली कार्टेज प्रणाली मुगल साम्राज्यों और अमीरों के मक्का जाने के जहाजों पर भी लागू होती थी, जो मुगल गरिमा के विरुद्ध था।

हुगली पर अधिकार (1579-1632)

बंगाल में पुर्तगाली व्यापारियों और दस्युओं ने हुगली नदी के तट पर एक महत्वपूर्ण बस्ती स्थापित कर ली थी। यहाँ वे नमक, तम्बाकू और गुलामों का अवैध व्यापार करते थे। स्थिति तब बिगड़ गई जब पुर्तगालियों ने शाहजहाँ की माता मरियम-उज़-ज़मानी के जहाज को लूट लिया और कुछ मुस्लिम महिलाओं को पकड़ लिया। क्रोधित होकर शाहजहाँ ने 1632 ई. में कासिम खान जुवेनी के नेतृत्व में एक विशाल सेना हुगली भेजी। मुगल सेना ने हुगली के किले को घेरकर नष्ट कर दिया और सैकड़ों पुर्तगालियों को बंदी बना लिया। यह घटना उत्तर भारत में पुर्तगाली सैन्य और राजनीतिक प्रभुत्व का अंत थी।

पुर्तगालियों का पतन: कारणों का विश्लेषण

पुर्तगाली साम्राज्य, जो कभी हिंद महासागर का अजेय अधिपति था, 17वीं शताब्दी के अंत तक डच और ब्रिटिश शक्तियों के सामने गौण हो गया। इस पतन के पीछे बहुआयामी कारण थे:

कारक

व्याख्या (UPSC विश्लेषण हेतु)

- 1. राजनीतिक संरचना की कमजोरी** पुर्तगाल एक छोटा सा देश था जिसकी जनसंख्या भी सीमित थी। विशाल एशियाई और अफ्रीकी साम्राज्य को प्रबंधित करने के लिए उसके पास पर्याप्त मानव संसाधन (जनशक्ति) नहीं थी।
- 2. स्पेन के साथ संधि (1580)** 1580 में पुर्तगाल का राजमुकुट स्पेन के राजा फिलिप द्वितीय के पास चला गया। परिणामस्वरूप, पुर्तगाल स्पेन के यूरोपीय युद्धों (विशेषकर डच और ब्रिटिशों के विरुद्ध) में उलझ गया। डचों ने इसी बहाने पुर्तगाली उपनिवेशों पर आक्रमण प्रारंभ किया।
- 3. धार्मिक असहिष्णुता** क्रूर इन्क्विज़िशन नीति के कारण स्थानीय भारतीय जनता और व्यापारियों ने पुर्तगालियों का साथ छोड़ दिया और डच/अंग्रेजों का स्वागत किया।
- 4. निजी व्यापार और भ्रष्टाचार** पुर्तगाली अधिकारियों और पादरियों द्वारा राजकीय व्यापार के स्थान पर व्यक्तिगत लाभ के लिए निजी व्यापार को बढ़ावा दिया गया। राजस्व का बड़ा भाग व्यक्तिगत जेबों में चला गया और प्रशासन कमजोर हुआ।
- 5. डच और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनियों का उदय** पुर्तगाली राज्य प्रायोजित उद्यम था, जबकि डच और ब्रिटिश संयुक्त पूंजी वाली निजी कंपनियाँ थीं। इन कंपनियों के पास अधिक पूंजी, बेहतर जहाज़ और लचीली प्रबंधन प्रणाली थी। 1612 ई. का सूरत का युद्ध (ब्रिटिश बनाम पुर्तगाली) ब्रिटिश नौसैनिक श्रेष्ठता का प्रमाण था।
- 6. स्थानीय शासकों का प्रतिरोध** मराठा शासक शिवाजी ने पुर्तगाली क्षेत्रों पर लगातार दबाव बनाए रखा। बाद में मराठा नौसेना (कान्होजी आंग्रे के नेतृत्व में) ने पुर्तगाली समुद्री गतिविधियों को सीमित कर दिया।

लाभ और हानियाँ: पुर्तगाली काल का एक संतुलित मूल्यांकन

लाभ (Advantages):

- नई फसलों का आगमन: पुर्तगाली अमेरिकी महाद्वीपों से कई महत्वपूर्ण फसलें भारत लाए, जिन्होंने भारतीय कृषि और भोजन की आदतों को स्थायी रूप से बदल दिया। इनमें मिर्च, आलू, टमाटर, तम्बाकू, काजू, पपीता और अनन्नास शामिल हैं। आज भारतीय भोजन में मिर्च के बिना स्वाद की कल्पना करना कठिन है, जो एक पुर्तगाली देन है।
- नौवहन कला का विकास: उन्होंने भारतीय जहाज निर्माण उद्योग को नई तकनीकों से परिचित कराया।
- प्रिंटिंग प्रेस: पुर्तगाली 1556 ई. में भारत में प्रथम मुद्रण यंत्र लाए, जिसका प्रयोग प्रारंभ में धार्मिक साहित्य के लिए हुआ।

हानियाँ (Disadvantages):

- समुद्री आतंक और शोषण: कार्टेज प्रणाली ने भारतीय व्यापारियों की स्वतंत्रता समाप्त कर दी और पश्चिमी तट की अर्थव्यवस्था को क्षति पहुंचाई।
- सांस्कृतिक विनाश: गोवा इन्क्विज़िशन के दौरान हजारों हिंदू मंदिर तोड़े गए और प्राचीन परंपराओं को कुचला गया।
- दास व्यापार: पुर्तगाली भारतीय दासों (विशेषकर महिलाओं और बच्चों) को हुगली और गोवा से अफ्रीका एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के बाजारों में बेचने के लिए कुख्यात थे।

तुलनात्मक विश्लेषण: पुर्तगाली बनाम अन्य यूरोपीय शक्तियाँ

विशेषता	पुर्तगाली	डच	ब्रिटिश
प्राथमिक उद्देश्य	व्यापार एवं धर्म प्रसार	शुद्ध व्यापार (मसाला एकाधिकार)	व्यापार एवं क्षेत्रीय साम्राज्य
प्रशासनिक मॉडल	राज्य नियंत्रित (एस्टाडो दा इंडिया)	संयुक्त पूँजी कंपनी (VOC)	संयुक्त पूँजी कंपनी (EIC)
शक्ति का केंद्र	गोवा	बटाविया (जकार्ता)	कोलकाता, मद्रास, बॉम्बे
धार्मिक नीति	अत्यधिक असहिष्णु (जबरन धर्मांतरण)	उदासीन (व्यापार को प्राथमिकता)	आरंभ में उदासीन, बाद में मिशनरी गतिविधियाँ
प्रमुख उत्पाद	मसाले, काली मिर्च	मसाले (लौंग, जायफल)	वस्त्र, चाय, नील, अफीम

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समसामयिकी (2024-2026)

यद्यपि पुर्तगाली साम्राज्य इतिहास बन चुका है, किंतु इसके अवशेष आज भी भारत की सांस्कृतिक और कूटनीतिक नीतियों को प्रभावित करते हैं।

- गोवा मुक्ति दिवस (19 दिसंबर): हर वर्ष मनाया जाने वाला यह दिवस 1961 के 'ऑपरेशन विजय' का स्मरण कराता है, जब भारतीय सेना ने गोवा, दमन और दीव को पुर्तगाली शासन से मुक्त कराया था। पुर्तगाल ने 1974 की 'कार्नेशन क्रांति' के पश्चात ही भारत की संप्रभुता को औपचारिक मान्यता दी।
- भारत-पुर्तगाल संबंध: वर्तमान में द्विपक्षीय संबंध मैत्रीपूर्ण हैं। सितंबर 2024-जनवरी 2025 के दौरान भारत और पुर्तगाल के बीच स्टार्टअप और नवीकरणीय ऊर्जा सहयोग पर केंद्रित कई उच्च-स्तरीय वार्ताएँ हुई हैं। प्रधानमंत्री मोदी और पुर्तगाली प्रधानमंत्री के बीच हाल की मुलाकातों में समुद्री सुरक्षा सहयोग को प्राथमिकता दी गई है।
- गोवा में विरासत संरक्षण: गोवा के चर्च और कॉन्वेंट (जैसे बॉम जीज़स बेसिलिका) UNESCO विश्व धरोहर स्थल हैं। इनके संरक्षण हेतु 2025 के केंद्रीय बजट में विशेष अनुदान की घोषणा की गई।

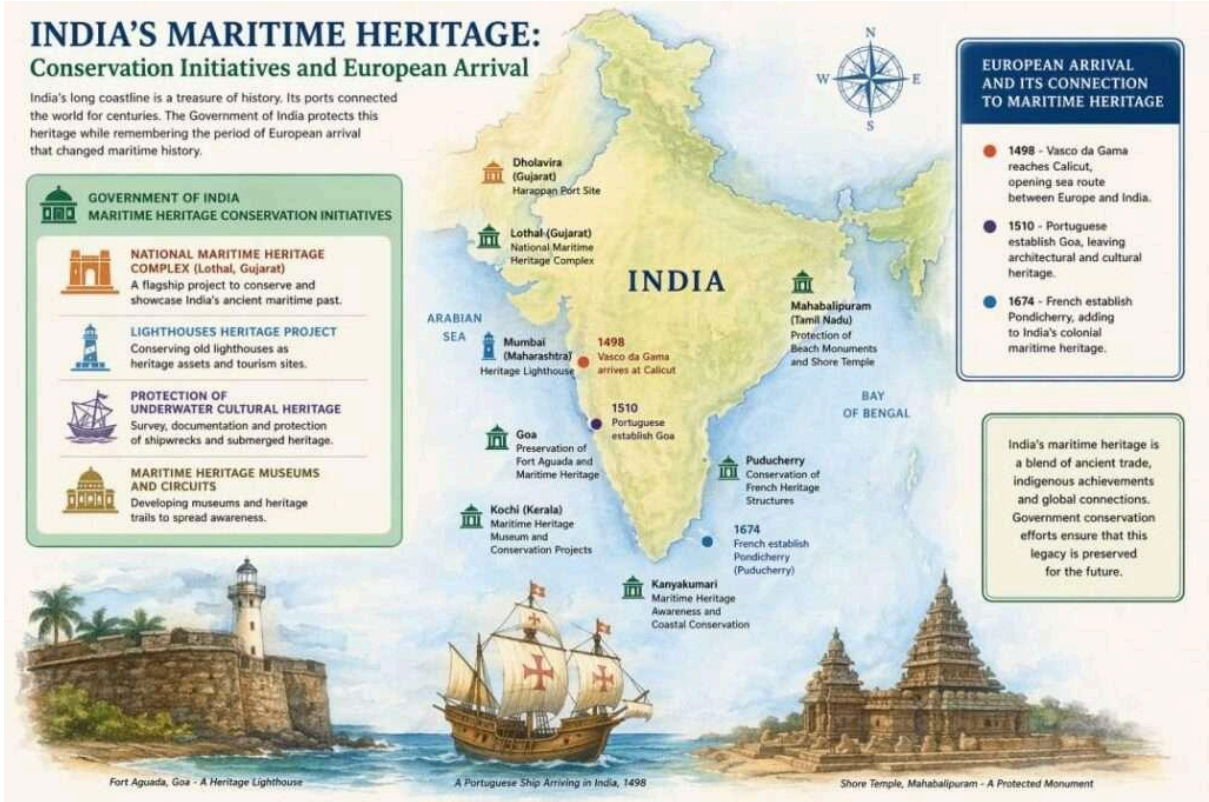
चुनौतियाँ / मुद्दे (ऐतिहासिक अवशेष के रूप में)

- गोवा नागरिकता संहिता का मुद्दा: पुर्तगाली काल के विवाह और संपत्ति कानूनों की व्याख्या आज भी गोवा के सिविल कोड में जटिलताएँ उत्पन्न करती है।
- अभिलेखों का अभाव: पुर्तगाली दस्तावेज़ अधिकतर पुरानी पुर्तगाली भाषा में हैं, जिसके कारण इतिहासकारों को स्रोत सामग्री तक पहुँचने में कठिनाई होती है। कई दस्तावेज़ लिस्बन में संग्रहीत हैं, जो भारतीय विद्वानों के लिए सुलभ नहीं हैं।

- धर्मांतरण की विरासत: पुर्तगाली इन्क्विज़िशन की स्मृति आज भी हिंदू राष्ट्रवादी संगठनों के एक वर्ग द्वारा सांप्रदायिक धुवीकरण के लिए प्रयोग की जाती है।

सरकारी योजनाएँ एवं नीतियाँ (विरासत संरक्षण)

योजना/नीति	वर्ष	उद्देश्य (पुर्तगाली विरासत से संबंध)
राष्ट्रीय विरासत संरक्षण कोष	2023 (संशोधित)	गोवा में पुर्तगाली कालीन भवनों का जीर्णोद्धार।
प्रोजेक्ट मौसम	2014	हिंद महासागर के समुद्री व्यापारिक मार्गों (पुर्तगाली मार्ग सहित) का अध्ययन और पुनर्स्थापना।
राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन	2003	पुरानी पुर्तगाली पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण और संरक्षण।



आगे की राह (Way Forward)

- अभिलेखीय डिजिटलीकरण: भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) और पुर्तगाल सरकार के मध्य समझौता ज्ञापन (MoU) करके गोवा संबंधी दुर्लभ दस्तावेजों को ऑनलाइन सुलभ बनाना।
- शैक्षणिक अनुसंधान को प्रोत्साहन: UPSC परीक्षा में पुर्तगाली काल के सामाजिक-आर्थिक पहलुओं पर अधिक गहन प्रश्न पूछे जा सकते हैं, जिसके लिए विश्वविद्यालयों में इंडो-पुर्तगाली अध्ययन केंद्रों को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।
- सांस्कृतिक कूटनीति: पुर्तगाल के साथ साझा विरासत को शीत युद्ध काल की कड़वाहट से परे हटकर भारत-यूरोपीय संघ संबंधों के एक सूत्र के रूप में विकसित करना।

निष्कर्ष

भारत में यूरोपियों का आगमन (arrival of europeans in india) आधुनिक भारतीय इतिहास का वह प्रथम अध्याय है जिसने साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के युग का सूत्रपात किया। पुर्तगालियों ने भारतीय समुद्री क्षितिज पर जो नीली जल नीति और किलेबंदी की परंपरा शुरू की, उसे आगे चलकर डच और ब्रिटिशों ने और अधिक परिष्कृत और क्रूरतापूर्ण बना दिया। पुर्तगालियों का शासन अल्पायु होने के बावजूद अत्यंत प्रभावशाली था; उन्होंने सिद्ध कर दिया कि भारत की राजनीतिक विखंडन की स्थिति में एक सुसंगठित नौसैनिक शक्ति किस प्रकार आर्थिक और राजनीतिक लाभ अर्जित कर सकती है। गोवा का मुक्ति संग्राम और उसके बाद का एकीकरण हमें याद दिलाता है कि साम्राज्य चाहे कितने भी शक्तिशाली हों, उनका पतन अवश्यभावी है और अंततः स्वतंत्रता की चाह ही जीतती है।

UPSC एकीकरण (PYQs)

प्रारंभिक परीक्षा (प्रीलिम्स) हेतु पिछले वर्षों के प्रश्न (PYQs)

1. प्रश्न (2023): भारत में यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों के आगमन के संबंध में, निम्नलिखित में से कौन-सा कालानुक्रमिक क्रम सही है?
(a) पुर्तगाली - डच - ब्रिटिश - फ्रांसीसी
(b) डच - पुर्तगाली - ब्रिटिश - फ्रांसीसी
(c) ब्रिटिश - पुर्तगाली - डच - फ्रांसीसी
(d) पुर्तगाली - ब्रिटिश - डच - फ्रांसीसी
उत्तर: (a) पुर्तगाली - डच - ब्रिटिश - फ्रांसीसी
व्याख्या: पुर्तगाली 1498 में आए, डच 1602, ब्रिटिश 1600/1612, तथा फ्रांसीसी 1664 में।
2. प्रश्न (2016): पुर्तगाली नौसेना द्वारा 'कार्टेज' प्रणाली लागू करने का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
(a) समुद्री डकैतों को रोकना
(b) व्यापारिक जहाजों के लिए मानक सुरक्षा कोड लागू करना
(c) हिंद महासागर में व्यापार पर पुर्तगाली एकाधिकार स्थापित करना
(d) भारतीय शासकों से कर वसूलना
उत्तर: (c) हिंद महासागर में व्यापार पर पुर्तगाली एकाधिकार स्थापित करना
व्याख्या: यह एक लाइसेंस प्रणाली थी जिसके तहत बिना पुर्तगाली अनुमति के कोई भी जहाज समुद्र में नहीं चल सकता था।
3. प्रश्न (2015): 'ब्लू वाटर पॉलिसी' का श्रेय किस पुर्तगाली वायसराय को दिया जाता है?
(a) अफोंसो डी अल्बुकर्क
(b) फ्रांसिस्को डी अल्मेडा
(c) नूनो दा कुन्हा
(d) वास्को डि गामा
उत्तर: (b) फ्रांसिस्को डी अल्मेडा
4. प्रश्न (2013): मध्यकालीन भारत में 'काली मिर्च' का प्रमुख उत्पादक क्षेत्र, जिसके लिए पुर्तगाली सर्वप्रथम आए थे, कौन सा था?
(a) गुजरात
(b) मालाबार तट
(c) कोरोमंडल तट
(d) बंगाल
उत्तर: (b) मालाबार तट
5. प्रश्न (2012): शिवाजी के समकालीन कौन से पुर्तगाली वायसराय थे, जिनसे उनका संघर्ष हुआ?
(a) कोंडे दा व्हिला वर्डे
(b) अल्बुकर्क
(c) अल्मेडा

(d) नूनो दा कुन्हा

उत्तर: (a) कोंडे दा व्हिला वर्डे (और सामान्यतः गोवा के वायसराय)

मुख्य परीक्षा (मेन्स) हेतु पिछले वर्षों के प्रश्न (PYQs) एवं मॉडल उत्तर

1. प्रश्न (मेन्स 2022): "पुर्तगाली औपनिवेशिक उद्यम भारत में सफल रहा, किंतु पुर्तगाली साम्राज्य विफल रहा।" आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। (150 शब्द)मॉडल उत्तर:
परिचय: 1498 में वास्को डि गामा के आगमन के साथ पुर्तगाली औपनिवेशिक उद्यम ने हिंद महासागर में यूरोपीय वर्चस्व का सूत्रपात किया। यद्यपि प्रारंभिक उद्यम अत्यंत लाभदायक रहा, दीर्घकाल में स्थायी साम्राज्य निर्माण में वे विफल रहे।
मुख्य भाग: उद्यम की सफलता का कारण उनकी नौसैनिक श्रेष्ठता (दीव का युद्ध, 1509), 'कार्टेज प्रणाली' द्वारा व्यापारिक एकाधिकार और अल्बुकर्क की रणनीतिक किलेबंदी (गोवा, मलक्का) थी। उन्होंने मसाला व्यापार से अपार धन अर्जित किया। किंतु साम्राज्य की विफलता के कारण बहुआयामी थे: (1) पुर्तगाल की छोटी जनसंख्या और सीमित संसाधन। (2) 1580 में स्पेन के साथ संधि, जिसने उन्हें यूरोपीय युद्धों में उलझा दिया। (3) क्रूर धार्मिक नीति (गोवा इन्क्विज़िशन), जिससे स्थानीय जनता विमुख हुई। (4) डच और ब्रिटिश कंपनियों का संगठित प्रतिस्पर्धा।
निष्कर्ष: पुर्तगाली एक व्यापारिक उद्यम के रूप में तो सफल रहे, किंतु एक दीर्घजीवी राजनीतिक साम्राज्य स्थापित करने में विफल रहे, जिसकी वजह उनकी आंतरिक कमज़ोरियाँ और यूरोपीय शक्ति संतुलन में बदलाव था।
2. प्रश्न (मेन्स 2018): भारत में पुर्तगालियों के पतन के मुख्य कारणों का विश्लेषण कीजिए। (250 शब्द)मॉडल उत्तर: (उपरोक्त विश्लेषण तालिका का सारांश)
 - राजनीतिक: स्पेनिश संधि (1580) और लिस्बन से दूरी के कारण अप्रभावी नियंत्रण।
 - प्रशासनिक: व्यापक भ्रष्टाचार और निजी व्यापारियों का उदय।
 - धार्मिक: जबरन धर्मांतरण और इन्क्विज़िशन नीतियों से भारतीय शासकों एवं जनता का विश्वास खोना।
 - आर्थिक: डच और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनियों की बेहतर पूँजी और व्यापारिक कुशलता के आगे टिक न पाना।
 - सैन्य: मराठों (शिवाजी और कान्होजी आंग्रे) और मुगलों (शाहजहाँ द्वारा हुगली पर आक्रमण) का सफल प्रतिरोध।

अभ्यास खंड (Practice Section)

बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs) - उत्तर सहित

1. प्रसिद्ध पुर्तगाली वायसराय अफोंसो डी अल्बुकर्क ने गोवा पर कब्जा किस शासक से किया था?
(a) ज़मोरिन
(b) यूसुफ आदिल शाह
(c) कृष्णदेव राय
(d) बहादुर शाह
उत्तर: (b)
2. पुर्तगालियों द्वारा स्थापित 'एस्टाडो दा इंडिया' का मुख्यालय कहाँ था?
(a) कोचीन
(b) कालीकट
(c) गोवा
(d) दीव
उत्तर: (c)
3. निम्नलिखित में से कौन सी फसल पुर्तगालियों द्वारा भारत में नहीं लाई गई?
(a) मिर्च

- (b) आलू
- (c) तम्बाकू
- (d) गन्ना

उत्तर: (d) गन्ना प्राचीन काल से भारत में उगाया जाता था।

4. 'दीव का युद्ध' (1509) किनके बीच लड़ा गया था?
- (a) पुर्तगाली और मुगल
 - (b) पुर्तगाली और मराठा
 - (c) पुर्तगाली और मिस्र-गुजरात-कालीकट संयुक्त बेड़े
 - (d) पुर्तगाली और डच
- उत्तर: (c)
5. शाहजहाँ के आदेश पर हुगली के पुर्तगाली गढ़ को किसने नष्ट किया?
- (a) मीर जुमला
 - (b) कासिम खान जुवैनी
 - (c) शाइस्ता खान
 - (d) राजा मान सिंह
- उत्तर: (b)

मुख्य परीक्षा (मेन्स) उत्तर लेखन अभ्यास हेतु प्रश्न

1. प्रश्न: पुर्तगाली 'कार्टेज प्रणाली' क्या थी? भारतीय समुद्री व्यापार पर इसके प्रभाव की विवेचना कीजिए। (150 शब्द)
2. प्रश्न: "अफोंसो डी अल्बुकर्क पूर्व में पुर्तगाली साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक था।" इस कथन के संदर्भ में उसकी नीतियों का मूल्यांकन कीजिए। (200 शब्द)
3. प्रश्न: भारत में पुर्तगाली शक्ति के पतन के लिए उत्तरदायी आर्थिक और सामाजिक कारणों का विश्लेषण कीजिए। (150 शब्द)
4. प्रश्न: पुर्तगालियों की धार्मिक नीति ने किस प्रकार भारतीय राजनीति में हस्तक्षेप किया और उनके पतन को निमंत्रित किया? (200 शब्द)
5. प्रश्न: भारत में पुर्तगालियों की व्यापारिक गतिविधियों की तुलना डच गतिविधियों से कीजिए। (150 शब्द)

उत्तर लेखन अभ्यास

1. पुर्तगाली 'ब्लू वाटर पॉलिसी' की व्याख्या कीजिए। (150 शब्द)

परिचय: 'ब्लू वाटर पॉलिसी' (नीली जल नीति) प्रथम पुर्तगाली वायसराय फ्रांसिस्को डी अल्मेडा द्वारा प्रतिपादित एक सामुद्रिक रणनीति थी, जिसका उद्देश्य स्थलीय क्षेत्रों के बजाय हिंद महासागर पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करना था।

मुख्य भाग: इस नीति का सार था कि पुर्तगालियों को भारत में बड़े भू-भागीय साम्राज्य के बजाय समुद्री मार्गों पर प्रभुत्व कायम करना चाहिए। अल्मेडा का मानना था कि समुद्र पर नियंत्रण रखने से व्यापार स्वतः सुरक्षित हो जाएगा। इस नीति की सफलता दीव के युद्ध (1509) में देखने को मिली, जहाँ पुर्तगाली नौसेना ने मिस्र और गुजरात के संयुक्त बेड़े को हराकर हिंद महासागर में अपना वर्चस्व स्थापित किया।

निष्कर्ष: यद्यपि यह नीति अल्पकाल में सफल रही, परंतु बाद में अफोंसो डी अल्बुकर्क ने इसे अपूर्ण बताते हुए स्थलीय क्षेत्रों (जैसे गोवा) पर अधिकार करना आवश्यक समझा, ताकि समुद्री बेड़े को मरम्मत और आपूर्ति के लिए सुरक्षित ठिकाने मिल सकें।

2. भारत में पुर्तगालियों के पतन के तीन प्रमुख कारण बताइए। (120 शब्द)

परिचय: 16वीं शताब्दी के अंत तक पुर्तगाली शक्ति क्षीण होने लगी थी और 17वीं शताब्दी तक वे भारतीय राजनीति में गौण हो गए।

मुख्य भाग:

1. स्पेन के साथ संघ (1580): पुर्तगाली राजमुकुट के स्पेन के हाथों में जाने से पुर्तगाली संसाधन यूरोपीय युद्धों में व्यस्त हो गए और डचों को पूर्वी व्यापार पर आक्रमण का अवसर मिला।
2. धार्मिक कट्टरता: गोवा में स्थापित इन्क्विज़िशन (धर्माधिकरण) और जबरन धर्मांतरण की नीतियों ने भारतीय जनता और स्थानीय शासकों में उनके प्रति गहरी घृणा उत्पन्न कर दी।
3. प्रतिस्पर्धी कंपनियों का उदय: डच और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनियाँ पूँजी और वाणिज्यिक कौशल में पुर्तगाली राज्य-प्रायोजित व्यापार से कहीं अधिक सक्षम सिद्ध हुईं।
निष्कर्ष: अतः आंतरिक कमज़ोरियों और बाह्य दबावों के कारण भारत में पुर्तगाली साम्राज्य का पतन अवश्यभावी हो गया

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQs)

प्रश्न 1: भारत में यूरोपियों का आगमन (arrival of europeans in india) सबसे पहले किसने किया था?

उत्तर: भारत में सबसे पहले आने वाले यूरोपीय पुर्तगाली थे। वास्को डि गामा 17 मई 1498 को कालीकट के पास काप्पड नामक स्थान पर पहुँचे थे।

प्रश्न 2: 'नीली जल नीति' (Blue Water Policy) क्या थी और इसे किसने लागू किया?

उत्तर: यह नीति फ्रांसिस्को डी अल्मेडा ने लागू की थी। इसका उद्देश्य भूमि पर किले बनाने के बजाय नौसेना को मजबूत करके हिंद महासागर के व्यापार पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करना था।

प्रश्न 3: पुर्तगालियों ने गोवा पर कब और किससे अधिकार किया?

उत्तर: अफोंसो डी अल्बुर्क ने 1510 ईस्वी में बीजापुर के सुल्तान यूसुफ आदिल शाह से गोवा पर अधिकार किया और इसे पुर्तगाली साम्राज्य की राजधानी बनाया।

प्रश्न 4: 'कार्टेज प्रणाली' (Cartage System) से आप क्या समझते हैं?

उत्तर: यह एक लाइसेंस प्रणाली थी जिसके तहत हिंद महासागर में नौकायन करने वाले प्रत्येक गैर-पुर्तगाली जहाज को पुर्तगालियों से अनुमति पत्र लेना अनिवार्य था, अन्यथा जहाज जब्त कर लिया जाता था।

प्रश्न 5: पुर्तगाली कौन-सी नई फसलें भारत लाए?

उत्तर: पुर्तगाली अमेरिका से मिर्च, आलू, टमाटर, तम्बाकू, काजू, पपीता और अनन्नास जैसी महत्वपूर्ण फसलें भारत लाए।

प्रश्न 6: भारत में पुर्तगाली शक्ति का पतन क्यों हुआ?

उत्तर: इसके प्रमुख कारण थे- स्पेन के साथ राजनीतिक संधि (1580), धार्मिक असहिष्णुता (इन्क्विज़िशन), डच और ब्रिटिश कंपनियों से प्रतिस्पर्धा, तथा भारतीय शासकों (मुगल एवं मराठा) का सशक्त प्रतिरोध।

प्रश्न 7: हुगली के पुर्तगाली अड्डे को किस मुगल बादशाह ने नष्ट किया?

उत्तर: मुगल बादशाह शाहजहाँ ने 1632 ईस्वी में कासिम खान जुवैनी के नेतृत्व में हुगली के पुर्तगाली किले पर आक्रमण कर इसे पूर्णतः नष्ट करवा दिया था।

प्रश्न 8: क्या भारत में यूरोपियों का आगमन (arrival of europeans in india) केवल व्यापार के लिए ही था?

उत्तर: प्रारंभ में यह केवल व्यापार के लिए था, किंतु पुर्तगालियों ने धर्म प्रसार और नौसैनिक वर्चस्व की नीति अपनाई। बाद में आने वाली शक्तियों (विशेषकर ब्रिटिश) ने इसे राजनीतिक साम्राज्यवाद में परिवर्तित कर दिया।

प्रश्न 9: दीव का युद्ध क्यों प्रसिद्ध है?

उत्तर: 1509 में लड़ा गया यह युद्ध पुर्तगाली नौसेना की श्रेष्ठता का प्रतीक है। इसमें पुर्तगालियों ने मिस्र, गुजरात और कालीकट की संयुक्त नौसेना को पराजित किया और हिंद महासागर पर लगभग एक शताब्दी तक अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया।

प्रश्न 10: भारत में पुर्तगाली प्रशासन का प्रमुख क्या कहलाता था?

उत्तर: भारत में पुर्तगाली प्रशासन का प्रमुख 'वायसराय' (राजप्रतिनिधि) कहलाता था और उसके अधीन पूरे पूर्वी साम्राज्य का शासन 'एस्टाडो दा इंडिया' के नाम से जाना जाता था।

लेखक परिचय:

लेखक: मो. अफजल अंसारी, एक UPSC अभ्यर्थी हैं जिन्हें एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में 4 वर्षों का अनुभव है। उनका वैकल्पिक विषय लोक प्रशासन है।

[ऋग्वैदिक काल](#)

